दादा भगवान परिवार का

फरवरी - २०२३

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

मित्रों,

पचास साल पहले यदि किसी से कहा जाता कि आप भारत में बैठे-बैठे दुनिया के किसी भी कोने में बैठे हुए व्यक्ति को देख सकते हैं, तो शायद उन्हें यह चमत्कार जैसा लगता। लेकिन क्या आज इसे कोई चमत्कार मानता है?! नहीं। क्योंकि वीडियो कॉलिंग की टेक्नॉलोजी के पीछे साइन्स है।

क्या सच में चमत्कार जैसा कुछ होता है? या फिर उसके पीछे के साइन्स अथवा उसका कारण नहीं जानने की वजह से उसे हम एक चमत्कार के रूप में देखते हैं?

चलिए, इस अंक में हम दादाश्री द्वारा चमत्कार के विषय में दी गई समझ प्राप्त करें और साथ ही साथ इन्ट्रेस्टिंग स्टोरिज़, एक्टिविटिज तथा आलु-चिली के साथ चमत्कार के पीछे के रहस्य को जानें।

- डिम्पल मेहता

जंतर मंतर क्या है अंदर

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : १० अंक : ११
अखंड क्रमांक: ११९
फरवरी - २०२३

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2023, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

दादाजी कहते हैं...

चमत्कार किसे कहा जाता है? दूसरा कोई कर ही नहीं सके, वह चमत्कार कहलाता है। मनुष्य चमत्कार कर ही नहीं सकता।

प्रश्नकर्ता : तो यह चमत्कार वास्तव में क्या है?

दादाश्री : चमत्कार मतलब मूर्ख बनाने का धंधा! हमें समझ में नहीं आए न, उसे हम चमत्कार कहते हैं! पर वह होता क्या है? वह विज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : पर दादा, कुछ लोग तो चमत्कार करके बताते हैं।

दादाश्री : वह तो विज्ञान नहीं जानने के कारण चमत्कार लगता है। यह 'साइन्स' है, चमत्कार नहीं है! या तो वह विज्ञान है या फिर उसकी हाथ की सफाई है।

चमत्कार से एक भी दुःख या चिंता कम नहीं होते हैं। इसलिए चमत्कार का जीवन में स्थान नहीं है। कृष्ण, राम या महावीर भगवान, किसी ने भी चमत्कार को अहमियत नहीं दी। उनका जीवन आदर्श जीवन रहा।

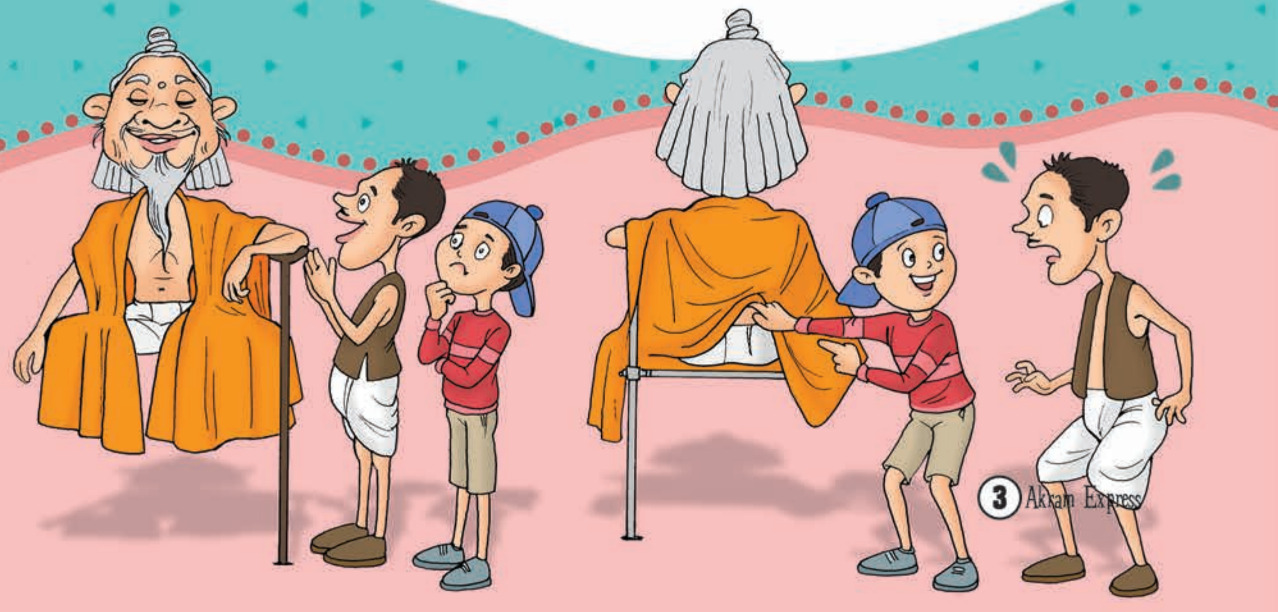

चमत्कार किसे कहते हैं? जिसमें किसी भी चीज़ या साधन की आवश्यकता नहीं पड़ती।

यह तो

चमत्कार में कौन फँसता है? वह जो लालची होता है!

उदाहरण के तौर पर : पुस्तक में कुछ खास तरह के पत्ते रखने से बिना पढ़े ही सब कुछ चमत्कारी रूप से याद हो जाएगा, लालची लोग ही ऐसी बातों में फँसते हैं।

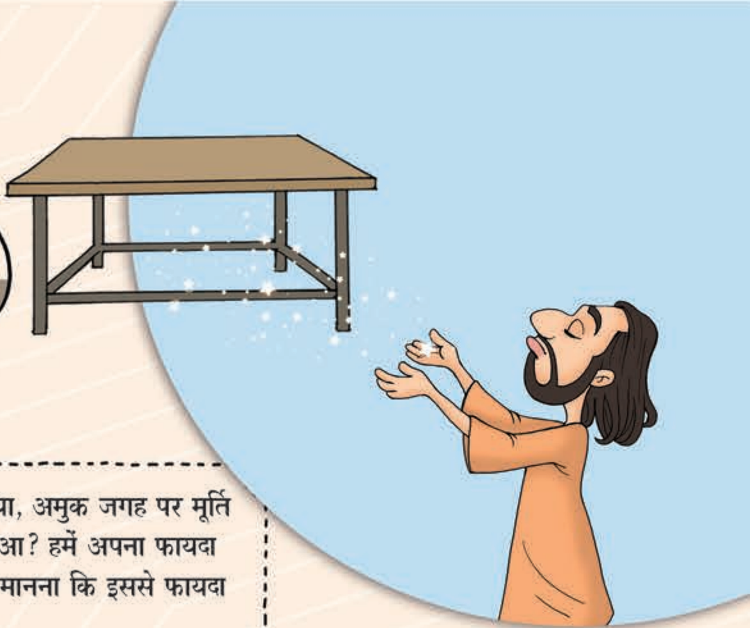

लोग कहेंगे, चमत्कार हो गया, अमुक जगह पर मूर्ति हिली। इससे आपको क्या फायदा हुआ? हमें अपना फायदा देखना चाहिए। चिंता कम हुई हो तो मानना कि इससे फायदा हुआ।

उदाहरण के तौर पर : कोई चमत्कार करके टेबल ऊपर-नीचे करे तो इससे आपको क्या फायदा हुआ? क्या इस चमत्कार से आपके इग्ज़ाम का टेन्शन कम हुआ? नहीं।

नई बात है!

कई जगहों पर मूर्तियों में प्राणप्रतिष्ठा करते समय जो अमृतवर्षा होती है, ऐसा शासन देव प्रतिष्ठा की गई मूर्तियों का महत्व बढ़ाने के लिए करते हैं।

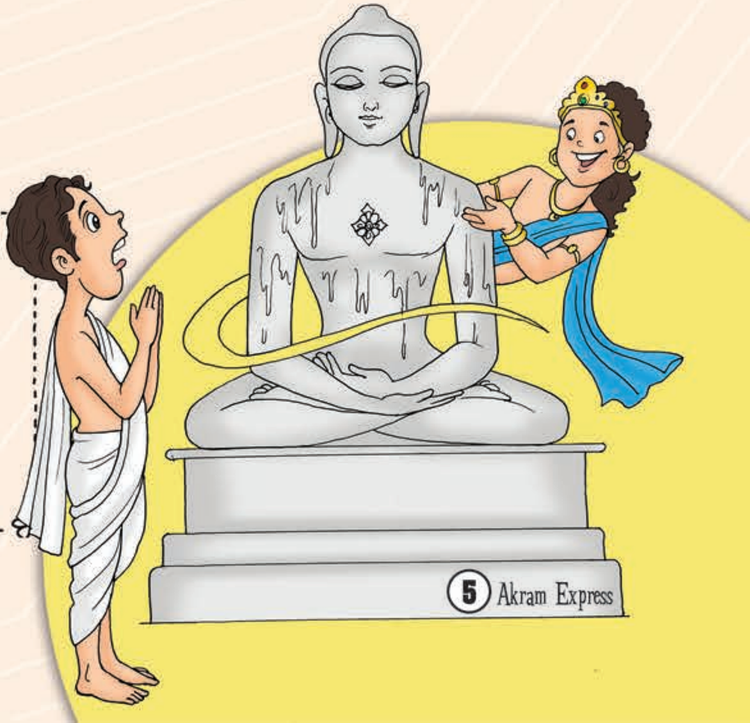

कॉज & इफेक्ट

"ये सब बुक्स और कपड़े जगह पर ठीक से रखे हुए होने चाहिए। साइन्स का होमवर्क हो जाना चाहिए। और हाँ, डिनर में मैं फलाफल सैन्डविच, कोक और बनाना वॉल्टन मफिन्स लूँगी।" अनेरी ने कुर्सी पर बैठे-बैठे ऑर्डर दिया। लेकिन आर्डर तो हवा में ही फेंका गया था। ऑर्डर रिसीव करने वाला वहाँ कोई था ही नहीं।

तभी मम्मी की आवाज़ आई, "अनेरी, कहाँ हो तुम?"

और अनेरी एकदम संभलकर बैठ गई। नहीं-नहीं, अनेरी कोई सपना नहीं देख रही थी। वह अपने ऐसे ड्रीम वर्ल्ड में थी जहाँ उसे साइन्स न पढ़ना पड़े, कोई काम न करना पड़े और बस मज़ेदार खाना मिलता रहे!

"आई, मॉम..." अनेरी ने अपने आप को मम्मी की डाँट खाने के लिए तैयार कर लिया। मम्मी की बातें भी उसे याद हो गई थीं। मन ही मन वह मम्मी की बातें दोहरा रही थी। "अनेरी, तुम्हारे रूम की हालत तो देखो! यह सब कौन साफ करेगा? कोई जादू नहीं होने वाला। तुम्हें खुद ही करना पड़ेगा।"

वैसे तो अनेरी को पता था कि रियल वर्ल्ड में जादू नहीं होता। मैजिक तो सिर्फ मूविज़ और बुक्स के फैन्टसी वर्ल्ड में ही होता है। लेकिन फिर भी उसे अपने ड्रीम वर्ल्ड में रहना अच्छा लगता था। क्योंकि रियल वर्ल्ड के काम तथा पढ़ाई करने में उसका मन नहीं लगता था।

लेकिन इस बार मॉम ने रूटीन बातों में कुछ नया जोड़ दिया, "लेकिन हाँ, जादू होने वाला है!" अनेरी के कान खड़े हो गए।

"आज शाम को टाउन हॉल में एक मैजिक शो है। डैडी शो की टिकट लेकर आने वाले हैं। लेकिन तुम तभी जा सकोगी जब तुम अपना

साइन्स का होमवर्क फिनिश कर लोगी।" मम्मी ने कन्डिशन रखी।

अनेरी ने खुशी-खुशी मम्मी की बात मान ली। उसकी लाइफ का पहला मैजिक शो था। यह मौका वह कैसे जाने देती?

टाउन हॉल के ऑडियन्स में से शायद किसी को भी अनेरी के जितना एक्साइटमेन्ट नहीं था। स्टेज पर धुँआ फैल गया और उसमें से गोल्डन शाइनिंग ड्रेस में एक लेडी बाहर आई। उसे देखकर अनेरी स्तब्ध रह गई।

स्टेज पर एक टेबल रखा गया। टेबल पर दो ग्लास रखे गए। लेडी ने टेबल के पास जाकर एक ग्लास में पानी डाला। ऑडियन्स को ग्लास ऊपर करके दिखाया। फिर उसी पानी को दूसरे खाली ग्लास में डाल दिया। ग्लास ऊपर करके उल्टा किया, तो पानी गायब हो चुका था। तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी और अनेरी के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उसने तो मैजिक सिर्फ मूविज़ तथा बुक्स में ही देखा था।

"क्या रियल लाइफ में भी मैजिक पॉसिबल है?!" मैजिक से ज्यादा मैजिक करने वाली लेडी से अनेरी ज्यादा इम्प्रेस थी। अनेरी के लिए उस पल उस लेडी से ज्यादा पॉवरफुल दुनिया में और कोई नहीं था।

अब लेडी दूसरे टेबल पर गई। वहाँ पर काँच का

एक बड़ा बरतन रखा था। जिसमें पानी भरा हुआ था। लेडी ने काँच की बॉटल पानी में डाली। बॉटल पानी में डूब गई। अब लेडी काँच के दूसरे बरतन के पास गई, जिसमें पानी के समान ही लिक्विड भरा था। लेडी ने सब के सामने उसमें बॉटल डाली। आँख बंद करके एक मंत्र पढ़ा और बॉटल बरतन से गायब हो गई। फिर से तालियाँ बजीं। अनेरी मंत्रमुग्ध हो गई। उसने पलक झपकाए बिना पूरा शो देखा।

उस रात अनेरी घर जाकर अपनी कल्पना की दुनिया में नहीं बल्कि मैजिक की दुनिया में खो गई। उसने अपनी साइन्स की बुक्स को टेबल पर रखा और उस लेडी की तरह अपने हाथों को ऊपर-नीचे किया। अंदर ही अंदर उसे ऐसी इच्छा हुई कि साइन्स की बुक्स भी गायब हो जाए। उसके हाथ थक गए लेकिन बुक्स वहीं की वहीं रही।

"कोई बात नहीं, पड़े रहो यहीं। आज मैं तुम्हें स्कूल बैग में पैक नहीं करूँगी। कल साइन्स क्लास में गेस्ट स्पीकर आने वाले हैं इसलिए मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं है।" अनेरी बुक्स से इस तरह बातें कर रही थी मानों साइन्स बुक्स उसकी बातें सुन रही हों।

दूसरे दिन, साइन्स क्लास में गेस्ट स्पीकर को देखकर अनेरी को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। कल जो लेडी उसे दुनिया की सबसे पॉवरफुल व्यक्ति लग रही थीं, वह आज एकदम ऑर्डनरी दिख रही थीं। हाँ, मैजिक शो की मैजिक लेडी ही साइन्स क्लास की गेस्ट स्पीकर थीं।

साइन्स टीचर ने पूरी क्लास को मैजिक लेडी का परिचय करवाया, "ये हैं मिस सुनंदा, मेरी स्कूल फ्रेन्ड। बचपन से ही हम दोनों को साइन्स में बहुत ही इन्टरेस्ट था। और इसीलिए ही मैं साइन्स टीचर

बनी और मिस सुनंदा मजिशन। जो अपने मैजिक में साइन्स का प्रयोग करती हैं। आज सुनंदा मैडम हमारे साथ 'साइन्स इन मैजिक' के बारे में बातें करेंगी।

सुनंदा मैडम ने मैजिक शो में दिखाई गई कुछ मैजिक ट्रिक्स क्लास रूम में करके बताई। पूरे क्लास में "उह.. आह.." हो गया। बच्चे आश्चर्यचकित रह गए। अनेरी को वही मैजिक दोबारा देखने में उतना ही मजा आया।

"तो कैसा लगा मैजिक?" मिस सुनंदा ने बच्चों से पूछा।

"अमेज़िंग", "सुपर्ब", "फैन्टैस्टिक" जैसे शब्द बच्चों के मुँह से निकले।

"मैम, एक प्रश्न पूछूँ?" अनेरी ने हिम्मत करके कहा।

"हाँ, हाँ, वाय नॉट! आज हम बातें करने के लिए ही इकट्ठे हुए हैं।"

"मैम, क्या आप अपने मैजिकल पावर से कुछ भी गायब कर सकते हो?" अनेरी ने पूछा।

मिस सुनंदा को हँसी आ गई। "यदि मेरे पास कुछ भी गायब करने का पावर होता, तो मैं सबसे पहले अपना दर्द ही गायब नहीं कर देती?" सुनंदा मैडम ने अपनी कमर पर बँधे बेल्ट की ओर इशारा करके कहा, "दर्द के कारण यह बेल्ट पहनना पड़ता है। दुनिया में मैजिक जैसा कुछ नहीं होता है। यह सब तो साइन्स है।"

"साइन्स?!" यह शब्द सुनकर अनेरी का चेहरा उतर गया।

"हाँ, साइन्स। जिस ग्लास में मैंने पानी डाला था उसमें पॉली एक्रिलिक नाम का एक केमिकल था, जो पानी सोख लेता है। इसलिए तुम सब को ऐसा लगा कि पानी गायब हो गया। काँच के जिस बरतन में मैंने काँच की बॉटल डाली, उसमें पानी नहीं ग्लिसरिन था। प्रकाश के नियम के अनुसार काँच की बॉटल अंदर होने के बावजूद आपको दिखाई नहीं दी।" मिस सुनंदा ने मैजिक शो के ट्रिक्स के पीछे का साइन्स बताया।

"फ्रेन्ड्स, ये दुनिया साइन्स से चलती है। जैसे साइन्स में कॉज़ और इफेक्ट के नियम होते हैं, वैसे ही मैजिक में भी वही नियम लागू होता है। किसी भी इफेक्ट के पीछे कॉज़िज़ होते हैं। आप लोगों को जो मैजिक दिखा वह तो इफेक्ट था। उसके लिए मुझे ग्लिसरीन, पॉली एक्रिलिक आदि कॉज़िज़ की ज़रूरत पड़ी थी। ऐसे ही लाइफ के प्रॉब्लम्स भी कॉज़ और इफेक्ट से सॉल्व होते हैं, नहीं कि मैजिक का इंतजार करने से! अच्छे मार्क्स का 'इफेक्ट' चाहिए तो हार्ड वर्क का 'कॉज़' डालना पड़ेगा।"

बच्चों ने मिस सुनंदा से तरह-तरह के प्रश्न पूछे। यह जानकर कि साइन्स से ऐसी इन्ट्रेस्टिंग मैजिकल ट्रिक्स हो सकती हैं बच्चों की साइन्स के प्रति रुचि बढ़ गई।

अनेरी को भी उस दिन पहली बार साइन्स का महत्व समझ में आया। जिसका महत्व समझ में आता है, उसमें इन्ट्रेस्ट भी बढ़ ही जाता है! धीरे-धीरे अनेरी अपने ड्रीम वर्ल्ड में कम और साइन्स वर्ल्ड में अधिक रहने लगी। कॉज़ और इफेक्ट के नियमों का प्रयोग करते-करते हार्ड वर्क के कॉज़ से अब न सिर्फ अनेरी का साइन्स होमवर्क टाइम पर होने लगा बल्कि मम्मी का डाँटना भी कम होने लगा!

हेडी लमार

हाय फ्रेन्ड्स, मैं रिज़ो। हम यू.एस.ए के 'शेननडोआ नेशनल पार्क' में हाइकिंग के लिए आए हैं। यहाँ वाइ-फाइ सिग्नल वीक है। और थिओ मुझे नैचुरल ब्यूटी ऍन्जाय करने के लिए कह रहा है। लेकिन थोड़ा नेटवर्क आया है इसलिए मैंने पिछले सप्ताह वाशिंगटन डी.सी के साइन्स म्यूज़ियम में 'मदर ऑफ वाइ-फाइ' हेडी लमार के बारे में जो पढ़ा था, वह शेयर कर रहा हूँ।

मित्रों, ११ फरवरी को 'इन्टरनेशनल डे ऑफ वुमन ऐन्ड गर्ल्स इन साइन्स' है।

हजारों महिलाओं ने साइन्स के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। और उनमें से एक हैं, हेडी लमार।

हेडी का जन्म ऑस्ट्रेलिया में हुआ था। बचपन से ही हेडी को साइन्स में बहुत इन्टरेस्ट था। जब नन्ही हेडी अपने फादर के साथ टहलने निकलती तब मशीनों के काम करने के तरीकों के बारे में बातें करती।

पाँच वर्ष की उम्र में हेडी ने म्यूज़िक बॉक्स किस तरह चलता है यह जानने के लिए उसके सभी स्पेर पार्टस अलग-अलग करके फिर से जोड़ दिए थे।

युवावस्था में हेडी का इन्ट्ररेस्ट अन्य क्षेत्रों जैसे कि फिल्म ऐक्टिंग, म्यूज़िक आदि में बढ़ गया था लेकिन साइन्स में बिल्कुल कम नहीं हुआ था।

एक दिन हेडी अपने मित्र हावर्ड ह्युस के साथ बैठकर गप्पे मार रही थी। हावर्ड एक बिज़नेस मैन थे। बातों ही बातों में हावर्ड ने हेडी से कहा, "मुझे दुनिया के फास्टेस्ट एरोप्लेन्स बनाने हैं, जिसे मैं एयर फोर्स में दे सकूँ।" अचानक हेडी वहाँ से खड़ी हुई और अपनी लाइब्रेरी में गई। वहाँ से वह दो पुस्तकें लेकर आई-अमेज़िंग बर्ड्स और अन्डर-वॉटर लाइफ।

उसने दोनों पुस्तकों में से फास्टेस्ट बर्ड तथा फास्टेस्ट फिश के चित्र ढूँढ़कर उन चित्रों के आधार पर प्लेन के पंखों का कच्चा डिज़ाइन बनाया और हावर्ड को दिया। हावर्ड डिज़ाइन देखकर दंग रह गए।

यह हेडी के तेज दिमाग की एक छोटी सी झलक है।

हेडी लमार द्वारा लगभग १०० वर्ष पूर्व की गई साइन्टिफिक खोजों का उपयोग आज सेल फोन्स, ब्लूटूथ, वाइ-फाइ आदि में किया जाता है। साइन्स के क्षेत्र में उनकी एक्स्ट्रा ऑर्डनरी खोज के कारण ही आज हेडी लमार को 'द मदर ऑफ़ वाइ-फाइ' के रूप में जाना जाता है।

आपको यकीन नहीं होगा लेकिन ज़ोइ को इस म्यूज़ियम में से बाहर निकालने में हमारा दम निकल गया था। अंत में जिफ़ी ने उसे उठाकर बाहर निकाला था।

अब नेक्स्ट ट्रिप कहाँ करनी है मुझे इस बारे में मीटिंग करनी है। तो बाइ, फिर मिलेंगे!

मैजिकल रिवर

LIVE
मैं हूँ अमेरिका से टॉम कूपर और मेरे साथ है, कैमरामैन ली।
आफ्रीका के जंगल से हम 'मैजिकल रिवर' का प्रसारण कर रहे हैं। हमारे साथ बने रहिएगा।
क्या नाम है आपका? और क्या यह नदी चमत्कारी है?
मेरा नाम रॉम्पी है। इस नदी में ताम्बे का सिक्का डालने पर आप जो इच्छा करोगे वह पूरी हो जाएगी।
रियली? कोई भी इच्छा?
वेल, सब तो नहीं। लेकिन लगभग सब!

ओह! आइ सी। यहाँ मिस्टर हाथी दिखाई दे रहे हैं। चलो देखते हैं उनकी क्या इच्छा है।
ओह मैजिकल रिवर! मैं फिफ्टी इयर्स ओल्ड हूँ। मेरी आयु फिफ्टी इयर्स बढ़ा दो।
नदी कैसे आयु बढ़ा सकती है?
इसीलिए तो यह चमत्कारी नदी कहलाती है।
क्या इस नदी ने जंगल में किसी की आयु बढ़ाई है?
हाँ-हाँ, बहुत लोगों की। अब हमारे ग्रेट् अंकल को ही देख लो। उनकी आयु है हन्ड्रेड ऐन्ड टेन इयर्स!
तो चलिए, यहाँ एक छोटा सा ब्रेक लेते हैं। और ब्रेक के बाद मिलते हैं द् ग्रेट अंकल, यानि कि मिस्टर कछुए से।

चमत्कार तो पॉसिबल नहीं है। इसके पीछे जरूर कोई और रहस्य होना चाहिए।
हम्म... लगता है कछुए से पूछने पर जरूर पता चलेगा।
सो, वी आर बैक आफ्टर द ब्रेक। और हमारे साथ हैं, द ग्रेट अंकल!
सर, इस मैजिकल रिवर का रहस्य क्या है?
सालों पहले की बात है। जब मैं लगभग पंद्रह साल का था। जंगल में कई बीमारियाँ फैली हुई थीं।
किसी को पता नहीं था कि बीमारियों की वजह क्या है। मेरे दादाजी एक साइन्टिस्ट थे।
उन्होंने खोज निकाला कि नदी का पानी पीने से बीमारियाँ हुई हैं। पानी को साफ करने के लिए ताँबा (कॉपर) उपयोगी है।

यदि ताँबे के सिक्के नदी में फेंके जाएँ तो नदी का पानी निरोगी हो जाएगा। लेकिन दादाजी के कहने पर कोई अपने ताँबे के सिक्के नदी में क्यों फेंकेगा?
इसलिए दादाजी को एक आइडिया आया। उन्होंने जंगल में सभी से कहा कि ताँबे के सिक्के नदी में फेंकने से चमत्कार होगा और इच्छाएँ पूरी होंगी।
मन में इच्छा करके सभी ताँबे के सिक्के नदी में फेंकने लगे। विज्ञान काम करने लगा और पानी साफ होने लगा।
बीमारियाँ कम होती गईं। सब काम पर लग गए। और इसका श्रेय गया चमत्कारी नदी को!
तो फ्रेन्ड्स, इससे प्रमाणित होता है कि चमत्कार जैसा कुछ नहीं होता! आफ्रीकन जंगल की 'मैजिकल रिवर' से, मैं टॉम कूपर, कैमरामैन ली के साथ आपसे विदा लेता हूँ।

AALOO CHILLY
तुम अभी तक सोए नहीं?
मैं कल स्पर्धा में हार जाऊँगा तो?
चिली, यह लो मैजिक ड्रिंक। यह पीकर ही कोको कोयल हर साल जीतती है।
सच में?
चिली ड्रिंक पीकर तुरंत सो जाता है।

आ... आ... आलु, मैं जीत गया! मैजिक ड्रिंक ने चमत्कार कर दिया।
नहीं, तुमने किया। मैजिक ड्रिंक ने नहीं!
मैजिक ड्रिंक एक्चुअल में चिली शेक था। उसमें मैंने केमोमिल फ्लावर डाले थे। इसलिए तुम्हें अच्छी नींद आई।
तुम सो गए इसलिए तुम्हारे गले को रेस्ट मिला। और फिर तुम अच्छी तरह गा सके!
मतलब मैं अपनी मेहनत से जीता?!
हाँ! इस वर्ल्ड के बेस्ट सिंगर तो तुम ही हो न!
आलु, यू आर सो स्मार्ट!

मीठी यादें...

वर्षों पहले की बात है। पाँच मार्च को पूज्यश्री और नीरू माँ सत्संग प्रवास पूरा करके मुंबई वापस लौटे थे। रात में नीरू माँ को याद आया कि अगले दिन, यानी कि छः मार्च को पूज्यश्री का ज्ञानदिवस है। और तुरंत ही नीरू माँ ने तय किया कि पूज्यश्री का ज्ञानदिवस मनाया जाए। लगभग सत्तर महात्माओं को फोन करके आमंत्रण दिया गया। साथ ही प्रसाद में वडापाव और मसाला दूध की व्यवस्था की गई। यह सब सेटिंग नीरू माँ ने की।

अब हुआ यूँ कि सत्तर महात्माओं के प्रसाद की व्यवस्था की थी लेकिन लगभग तीन सौ-साढ़े तीन सौ महात्मा आ गए।

दूध एक ड्रम में रखा था। थोड़ी-थोड़ी देर में नीरू माँ चेक करते कि दूध कम तो नहीं है न? लेकिन दूध बिल्कुल कम नहीं पड़ा। अरे, बल्कि इतना बच गया कि आस-पड़ोस में बॉटल भर-भर के प्रसाद बाँटा गया।

क्या इसे चमत्कार कहा जाएगा? नहीं। नीरू माँ का महात्माओं को खिलाने का भाव और उनकी प्योरिटी का ऐसा असर हुआ कि उन्होंने एक बार ड्रम को छू लिया तो दूध कम ही नहीं पड़ा!

चलों खेलें... जादू के साथ...

बालमित्रों, मैजिक शो में कई जगहों पर सिक्के को अदृश्य करने की अनोखी बात और ट्रिक्स आपने देखी या सुनी होगी। तो आओ, हम भी एक ऐसी मैजिक ट्रिक सीखें और लोगों को मैजिक करके दिखाएँ।

1. आपको चाहिए... एक सिक्का, कैंची, २ पेपर, कांच का ग्लास, पेन्सिल, ग्लू।

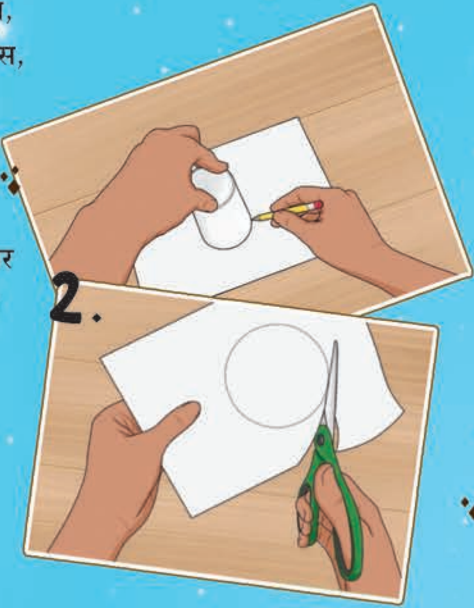

2. एक समान २ पेपर में से १ पेपर पर ग्लास उल्टा रखकर उसके आकार का गोलाकार बनाएँ।

3. कटे हुए गोलाकार को दूसरे पेपर पर रखें। अब ग्लास के किनारे पर ग्लू लगाकर रेडी कीजिए।

4. अब सिक्का पेपर पर रख दो। लोगों को खाली ग्लास दिखाने के बाद गोलाकार में काटे गए पेपर पर उल्टा ग्लास रख दो जिससे ग्लास गोलाकार पेपर के साथ चिपक जाए फिर धीरे-धीरे ग्लास को सिक्के की तरफ सरकाओ फिर उसे जरा सा ऊपर करके सिक्के पर रख दो। हो गया न सिक्का गायब!

Magician Tip

मित्रों, जब आप यह ट्रीक बताओगे तब आगे के स्टेप १,२,३ किसी को पता न चले इस तरह रेडी कर लो और देखने वाले को सिर्फ स्टेप ४ ही दिखाना है।

तो, अब आप भी रेडी हो न, लोगों को अपना मैजिक दिखाने के लिए?

Akram Express
February 2023
Year : 10, Issue : 11
Conti. Issue No.: 119

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

CREATIVE CONTEST

हेलो मित्रों,

मैं आपके लिए एक क्रिएटिव कॉन्टेस्ट लेकर आया हूँ, जिसमें आपको नीचे दिए गए फिंगर पपेट्स बनाकर उनका उपयोग करके एक क्रिएटिव वीडियो स्टोरी बनानी है। स्टोरी ज्यादा से ज्यादा १५ से २० लाइन की होनी चाहिए। यह स्टोरी १५ फरवरी तक ९३१३६६५५६२ पर भेज देना है। पपेट के साथ स्टोरी कहता हुआ वीडियो आपको भेजना है।

सरप्राइज़ गिफ्ट

जिसका वीडियो शॉर्ट और क्रिएटिव होगा उसे मिलेगा एक सरप्राइज़ गिफ्ट।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेवल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **Whatsapp** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025